लेखक संबंधित दिशानिर्देश

अन्वेषिका (हिंदी)

---

1. प्रविष्टियों संबंधित दिशानिर्देश

प्रकाशन के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पांडुलिपियाँ अन्वेषिका के लिए ही होनी चाहिए तथा अन्यत्र प्रकाशित अथवा प्रकाशन हेतु प्रस्तुत नहीं की गई हों।

लेख किसी ऐप के माध्यम से अनूदित न होकर मूल रूप से हिंदी में लिखे होने चाहिए।

1.1. प्रविष्टियों का विषय-क्षेत्र

प्रविष्टियां, अध्यापक शिक्षा के विषयों के अनुरूप होनी चाहिए, जिसमें शैक्षणिक नवाचार, शिक्षक प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा, नीति समीक्षा और अंतरराष्ट्रीय प्रासंगिकता बनाए रखते हुए भारतीय संदर्भ में शिक्षक शिक्षा के समकालीन विषय शामिल हैं, परंतु इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। शिक्षकों, शोधार्थियों, नीति-निर्माताओं और व्यवसायियों से प्रविष्टियां आमंत्रित हैं।

1.2. प्रविष्टियों के प्रकार

पत्रिका में प्रकाशन के लिए सामग्री मुख्यतः निम्नलिखित श्रेणियों में से एक से संबंधित होनी चाहिए:

- शोध लेख/शोध पत्र (शब्द-सीमा 4000-5000 शब्द हैं)
- नीति पत्र (शब्द-सीमा 4000-5000 शब्द हैं)
- चिंतन (शब्द-सीमा 1000 शब्द हैं)
- पुस्तक समीक्षा (शब्द-सीमा 500 शब्द हैं)

1.3. भाषा: अन्वेषिका के लिए प्रविष्टियाँ हिंदी में प्रस्तुत की जाएं।

1.4. प्रविष्टि प्रस्तुत करने की प्रक्रिया

सभी प्रविष्टियाँ ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से ही प्रस्तुत की जाएं, जिसमें जाँच-सूची और वचनबद्धता संबंधित आवश्यकताएं सम्मिलित हैं।

1.5. पांडुलिपियों को अनामित रखना

निष्पक्ष और न्यायोचित समीक्षा प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए, किसी भी परिस्थिति में लेखक, मुख्य पांडुलिपि फ़ाइल में अपना नाम, संस्थागत संबद्धता, संपर्क नंबर, ईमेल पता या कोई अन्य पहचान संबंधित जानकारी शामिल नहीं करेंगे। ये विवरण केवल प्रस्तुति फॉर्म और इसके अंतर्गत अपेक्षित दस्तावेज़ों में ही दिए जाएं। कृपया इस दिशानिर्देश का कड़ाईपूर्वक पालन करें, अन्यथा इन दिशानिर्देशों का पालन न करने वाली पांडुलिपियों को तुरंत अस्वीकार कर दिया जाएगा।

2. प्रारूपण (फॉर्मेटिंग) आवश्यकताएँ

2.1. दस्तावेज़ का प्रारूप:

- प्रविष्टियाँ माइक्रोसॉफ्ट वर्ड (.doc या .docx) प्रारूप में ए4 आकार में होनी चाहिए।
- कोकिला फॉन्ट (16-पॉइंट फॉन्ट आकार, उद्धरण, फुटनोट और संदर्भ सहित डबल लाइन स्पेसिंग के साथ) का सभी तरफ से एक इंच के मार्जिन के साथ प्रयोग करें।
- नीचे दायीं ओर पृष्ठ संख्या और हैडर में एक चलायमान शीर्षक शामिल करें।

2.2. संरचना:

- **सार:** प्रविष्टि प्रस्तुत करने की प्रक्रिया के दौरान एक अलग स्थान पर अध्ययन के उद्देश्य, विधियों, परिणामों और निष्कर्षों का सारांश 200 शब्दों की सीमा सहित दिया जाए।
- **मुख्य शब्द:** 4-6 प्रासंगिक मुख्य शब्द।
- **मुख्य पाठ्य:** इसमें परिचय, कार्यप्रणाली, परिणाम, चर्चा, निष्कर्ष और संदर्भ शामिल होने चाहिए। (*लेखक (लेखकों) का नाम, संबद्धता, संपर्क विवरण अथवा पहचान दर्शाने संबंधित कोई सूचना, पेपर में किसी भी स्थान पर सम्मिलित नहीं होनी चाहिए)*
- **संदर्भ:** सभी संदर्भों को एपीए (APA) के 7वें संस्करण के दिशानिर्देशों के अनुसार पाठ के अंत में वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया और लिखा जाए।

2.3. आंकड़े और तालिकाएँ

- सभी आंकड़ों में, आंकड़ों के नीचे उप शीर्षक (caption) दिया जाए।
- सभी तालिकाओं में, तालिका के ऊपर शीर्षक दिया जाए।
- आंकड़ों और तालिकाओं, दोनों को क्रमवार संख्या दी जाए (उदहारणतया; आंकड़ा 1, आंकड़ा 2; तालिका 1, तालिका 2) और पाठ में उपयुक्त प्रकार से उद्धृत/संदर्भ दिया जाए।

3. संपर्क सूचना:

पत्रिका से संबंधित सभी पत्राचार ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध विकल्प 'हमसे संपर्क करें' के माध्यम से किए जाएं।

प्रकाशन आचार नीति

एनसीटीई में, हम प्रकाशन आचार नीति के सर्वोत्तम मानकों को प्रोत्साहित करते हैं और प्रकाशन संबंधी कदाचारों के विरुद्ध हर-संभव उपाय करते हैं। एक प्रकाशक के रूप में, एनसीटीई प्रकाशन के सभी चरणों के संरक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों को गंभीरता से लेती है और अपनी नैतिक और अन्य जिम्मेदारियों को समझते हैं।

संपादकों के कर्तव्य और उत्तरदायित्व

संपादक कई सामान्य कर्तव्यों यथा पत्रिका की गुणवत्ता और प्रमाणिकता में निरंतर सुधार करना, लेखकों और पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करना, शैक्षणिक बहस को प्रोत्साहित करना तथा अन्य के अतिरिक्त, निम्नलिखित जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए उत्कृष्ट इच्छाशक्ति और पद्धति को लागू करने का दायित्व स्वीकार करते हैं:

संपादक मंडल

संपादकीय बोर्ड में शिक्षा के क्षेत्र के मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ शामिल होंगे। संपादक, पत्रिका के वेबपेज पर सदस्यों के पूरे नाम और संबद्धता के साथ-साथ संपादकीय कार्यालय की अद्यतन संपर्क सूचना भी उपलब्ध कराएगा।

प्रकाशन निर्णय

पत्रिका के लिए प्रस्तुत लेखों में से कौन-से लेख प्रकाशित किए जाएं, इसका निर्णय लेने की जिम्मेदारी संपादक की होनी चाहिए। ऐसे निर्णय प्रश्नाधीन कार्य की मान्यता और शोधकर्ताओं व पाठकों के लिए उसके महत्त्व से सदैव प्रभावित होने चाहिए। संपादक, पत्रिका के संपादकीय बोर्ड की नीतियों द्वारा निर्देशित हो सकता है और ऐसी कानूनी आवश्यकताओं, कॉपीराइट उल्लंघन और साहित्यिक चोरी से बाध्य है। संपादक इस निर्णय को लेने में अन्य संपादकों या समीक्षकों से परामर्श कर सकता है।

समकक्ष व्यक्ति समीक्षित प्रक्रिया

अन्वेषिका के लिए प्रस्तुत सभी प्रविष्टियों के लिए अज्ञात (ब्लाइंड) समकक्ष व्यक्ति समीक्षा प्रक्रिया अपनाई जाती है। लेखों की समीक्षा सबसे पहले संपादकों द्वारा की जाती है, जहां संपादक मंडल यह जाँच करता है कि वह पत्रिका की विषय-वस्तु के अनुरूप है और अपेक्षित गुणवत्ता मानकों को पूरा करता है। जो पांडुलिपियाँ इस मानदंड को पूरा नहीं करती है, उन्हें इसी चरण पर अस्वीकार किया जा सकता है। उपयुक्त पांडुलिपियों को फिर ब्लाइंड समीक्षा के लिए संबंधित क्षेत्र के विषय-विशेषज्ञों के पास भेजा जाता है। समीक्षक पांडुलिपि का मूल्यांकन करते है और चार श्रेणियों: स्वीकार्य, मामूली संशोधनों के साथ स्वीकार्य, बड़े संशोधनों के साथ स्वीकार्य अथवा अस्वीकार्य में से एक श्रेणी में अनुशंसा करते हैं। इसके बाद समीक्षक की टिप्पणियां लेखक (लेखकों) के साथ साझा की जाती है, जिनसे तदनुसार, अपनी पांडुलिपियों में संशोधन करना तथा दी गई समय-सीमा के अन्दर पुनः प्रस्तुत करना अपेक्षित होता है। यदि आवश्यक हो, तो सुझाए गए परिवर्तनों को सुनिश्चित करने के लिए समीक्षकों द्वारा संशोधित पांडुलिपियों की पुनः जाँच की जा सकती है। स्वीकार्यता और प्रकाशन के संबंध में अंतिम निर्णय संपादक मंडल का है।

निष्पक्षता

संपादक को पांडुलिपियों का मूल्यांकन लेखकों की जाति, लिंग, यौन अभिमुखता, धार्मिक विश्वास, जातीय मूल, नागरिकता या राजनीतिक दर्शन पर ध्यान दिए बिना उनकी बौद्धिक विषयवस्तु के आधार पर करना चाहिए। किसी शोध-पत्र को प्रकाशन के लिए स्वीकार या अस्वीकार करने का संपादक का निर्णय, केवल शोध-पत्र के महत्त्व, मौलिकता और स्पष्टता तथा पत्रिका के उद्देश्य के लिए अध्ययन की प्रासंगिकता पर आधारित होना चाहिए।

गोपनीयता

संपादक और किसी भी संपादकीय कर्मचारी को प्रस्तुत पांडुलिपि के बारे में संबंधित लेखक, समीक्षकों, संभावित समीक्षकों, अन्य संपादकीय सलाहकारों और प्रकाशक के अलावा किसी और को कोई सूचना नहीं देनी चाहिए। संपादक यह सुनिश्चित करेंगे कि प्रस्तुत सामग्री समीक्षाधीन होते हुए गोपनीय रहे।

प्रकटीकरण और हितों का टकराव

लेखक की स्पष्ट लिखित सहमति के बिना प्रस्तुत पांडुलिपि में प्रकट अप्रकाशित सामग्री का उपयोग संपादक द्वारा अपने शोध में नहीं किया जाना चाहिए। समकक्ष व्यक्ति समीक्षित प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त विशिष्ट जानकारी या विचारों को गोपनीय रखा जाना चाहिए और व्यक्तिगत लाभ के लिए उनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। संपादकों को उन पांडुलिपियों पर विचार करने से स्वयं को अलग रखना चाहिए (अर्थात, किसी सह-संपादक, सहयोगी संपादक या संपादकीय बोर्ड के किसी अन्य सदस्य से समीक्षा और विचार करने के लिए कहना चाहिए), जिनमें, शोध-पत्र से जुड़े किसी भी लेखक, कंपनी या (संभवतः) संस्थान के साथ प्रतिस्पर्धात्मक, सहयोगात्मक या अन्य संबंधों या संपर्कों के कारण उनके हितों का टकराव उत्पन्न होता हो। संपादकों को सभी योगदानकर्ताओं से प्रासंगिक प्रतिस्पर्धी हितों का प्रकटन करने और प्रकाशन के बाद, यदि प्रतिस्पर्धी हितों का प्रकटन होता है, तो सुधार करके प्रकाशित करने का अनुरोध करना चाहिए।

अनैतिक व्यवहार से निपटने की प्रक्रियाएँ

अनैतिक व्यवहार की पहचान किसी भी समय, किसी के द्वारा भी की जा सकती है और उसे संपादक या प्रकाशक के ध्यान में लाया जा सकता है। जो कोई भी संपादक या प्रकाशक को इस तरह के आचरण की सूचना देता है, उसे जाँच शुरु करने के लिए पर्याप्त जानकारी और साक्ष्य उपलब्ध कराने चाहिए। सभी आरोपों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और जब तक कि कोई सफल निर्णय या निष्कर्ष तक न पहुंच जाए, समान रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए। प्रकाशन से संबंधित अनैतिक व्यवहार के संबंध में बताए गए प्रत्येक कृत्य की जाँच की जानी चाहिए, भले ही प्रकाशन के कई वर्षों बाद ही उसका पता चले।

प्रस्तुत पांडुलिपि या प्रकाशित शोध-पत्र के संबंध में नैतिक शिकायतें प्राप्त होने पर संपादक को प्रकाशक के साथ मिलकर यथोचित प्रतिक्रियात्मक उपाय करने चाहिए। इन उपायों में, सामान्तया पांडुलिपि या शोध-पत्र के लेखक से संपर्क करना और संबंधित शिकायत या किए गए दावों पर उचित विचार करना शामिल होगा, लेकिन कदाचार की गंभीरता के आधार पर, संबंधित संस्थानों और शोध निकायों को भी आगे सूचित किया जा सकता है।

मामूली कदाचार के मामले में, व्यापक रूप से और अधिक संपादकों से परामर्श करके या बिना परामर्श के भी निपटा जा सकता है। किसी भी स्थिति में, लेखक को किसी भी आरोप का उत्तर देने का अवसर दिया जाना चाहिए।

गंभीर कदाचार के लिए निम्नलिखित में से एक या अधिक उपायों को लागू करने की आवश्यकता हो सकती है:

- जहां स्वीकार्य मानकों के बारे में गलतफहमी या गलत प्रयोग प्रतीत होता है, वहां लेखक या समीक्षक को सूचित करना या अवगत कराना।

- कदाचार का विवरण देते हुए एक औपचारिक नोटिस का प्रकाशन।
- लेखक या समीक्षक के विभाग या वित्तपोषण एजेंसी के प्रमुख को एक औपचारिक पत्र।
- पत्रिका से किसी प्रकाशन को औपचारिक रूप से त्याग देना या वापस लेना, साथ ही लेखक या समीक्षक के विभाग के प्रमुख को सूचित करना।
- एक निश्चित अवधि के लिए उस व्यक्ति द्वारा दिए जाने वाले लेखों पर औपचारिक प्रतिबन्ध लगाना।

लेखकों के कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व

प्रकाशन एवं प्रविष्टि शुल्क

पांडुलिपि प्रक्रिया के लिए लेखकों से कोई शुल्क या प्रभार नहीं लिया जाता है। लेखक न तो प्रविष्टि शुल्क और न ही प्रकाशन शुल्क का भुगतान करते हैं।

रिपोर्टिंग मानक

शोध-पत्रों के लेखकों को अपने कार्य का सटीक विवरण प्रस्तुत करना चाहिए और साथ ही उसके महत्त्व पर वस्तुनिष्ठ चर्चा भी करनी चाहिए। शोध-पत्र में अंतर्निहित आँकड़ों को सटीक रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। शोध-पत्र में पर्याप्त विवरण और संदर्भ होने चाहिए, ताकि अन्य लोग उस कार्य को दोहरा सकें। कपटपूर्ण या जानबूझकर गलत कथन, अनैतिक व्यवहार है और अस्वीकार्य है। समीक्षा और व्यावसायिक प्रकाशन लेख भी सटीक और वस्तुनिष्ठ होने चाहिए और इसी प्रकार संपादकीय राय वाले कार्य भी स्पष्ट होने चाहिए।

डेटा प्राप्त करना (डेटा एक्सेस) और अवधारण (रिटेंशन)

लेखकों से संपादकीय समीक्षा के लिए शोध-पत्र के संबंध में आरंभिक (Raw) डेटा उपलब्ध कराने के लिए कहा जा सकता है और यदि व्यावहारिक हो तो, उन्हें ऐसे डेटा तक सार्वजनिक पहुंच उपलब्ध कराने के लिए तैयार रहना चाहिए तथा किसी भी स्थिति में प्रकाशन के बाद यथोचित समय तक ऐसे डेटा को बनाए रखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मौलिकता और साहित्यिक चोरी

लेखकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उन्होंने पूरी तरह से मौलिक रचनाएँ लिखी हैं और यदि लेखकों ने दूसरों की रचनाएँ और/या शब्दों का उपयोग किया है, तो उन्हें उचित रूप से उद्धृत या उल्लेख किया जाना चाहिए। साहित्यिक चोरी कई रूपों में हो सकती है, जैसे किसी दूसरे के शोध-पत्र को अपने शोध-पत्र के रूप में "प्रस्तुत करना", किसी दूसरे के शोध-पत्र के वस्तुगत हिस्सों की नकल करना या उसका संक्षिप्त रूप देना (बिना श्रेय दिए) और दूसरों द्वारा किए गए शोध के परिणामों का दावा करना। साहित्यिक चोरी, अपने सभी रूपों में प्रकाशन संबंधित अनैतिक व्यवहार है और अस्वीकार्य है।

एकाधिक, अनावश्यक या समवर्ती प्रकाशन

एक लेखक को सामान्यतः एक ही शोध पर आधारित पांडुलिपियाँ एक से अधिक पत्रिकाओं या मुख्या प्रकाशनों में प्रकाशित नहीं करनी चाहिए। एक ही पांडुलिपि को एक से अधिक पत्रिकाओं में एक साथ प्रस्तुत करना प्रकाशन संबंधित अनैतिक व्यवहार माना जाता है। सामान्यतः, किसी लेखक को पहले से प्रकाशित शोध-पत्र को किसी अन्य पत्रिका में विचारार्थ प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

कॉपीराइट, (CC-BY) लेखकों के पास रहता है, इसलिए वे अपने पाठ के अंतिम पुनर्प्रकाशन के बारे में निर्णय ले सकते हैं। द्वितीयक प्रकाशन में प्राथमिक संदर्भ का उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए।

स्रोतों की स्वीकृति

दूसरों द्वारा किए गए कार्य का सदैव उचित आभार व्यक्त किया जाना चाहिए। लेखकों को उन प्रकाशनों का उद्धरण देना चाहिए जो किए गए काम की प्रकृति निर्धारित करने में प्रभावशाली रहे हैं। निजी तौर पर प्राप्त जानकारी, जैसे बातचीत, पत्राचार या तीसरे पक्ष के साथ चर्चा का उपयोग या उल्लेख स्रोत से स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जाना चाहिए। पांडुलिपियों की विषय-विशेषज्ञ के रूप में जाँच या आवेदनों को स्वीकार करने के दौरान प्राप्त सूचना, इन सेवाओं में शामिल लेखकों के काम जैसी गोपनीय सेवाओं को, उनकी स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

पांडुलिपियों के लेखक होना

लेखक होना केवल उन्हीं लोगों तक सीमित होना चाहिए, जिन्होंने प्रस्तुत किए गए अध्ययन की अवधारणा, डिज़ाइन, क्रियान्वयन या व्याख्या में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। उन सभी को सह-लेखकों के रूप में सूचीबद्ध किया जाना चाहिए, जिन लोगों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जहाँ ऐसे अन्य लोग भी हों, जिन्होंने शोध परियोजना के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं में भाग लिया हो, उन्हें योगदानकर्ता के रूप में स्वीकार या सूचीबद्ध किया जाना चाहिए। संबंधित लेखक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शोध-पत्र में सभी उपयुक्त सह-लेखक और कोई भी अनुपयुक्त सह-लेखक शामिल न हों और सभी सह-लेखकों ने शोध-पत्र के अंतिम संस्करण को देखा और अनुमोदित किया है और प्रकाशन के लिए इसे प्रस्तुत करने पर सहमति व्यक्त की है।

प्रकटीकरण और हितों का टकराव

सभी लेखकों को अपनी पांडुलिपि में किसी भी वित्तीय या अन्य महत्त्वपूर्ण हितों के टकराव का प्रकटन करना चाहिए, जो उनके पांडुलिपि के परिणामों या व्याख्या को प्रभावित कर सकता हो। पाठकों को इस बारे में सूचित किया जाना चाहिए कि शोध किसके द्वारा वित्तपोषित है और शोध में वित्तपोषणकर्ताओं की भूमिका क्या है।

प्रकाशित कार्यों में मूलभूत त्रुटियाँ

जब किसी लेखक को अपनी प्रकाशित रचना में कोई महत्त्वपूर्ण त्रुटि या अशुद्धि का पता चलता है, तो यह लेखक का दायित्व है कि वह पत्रिका के संपादक या प्रकाशक को तुरंत सूचित करे और संपादक के साथ मिलकर उस शोध-पत्र को वापस लेने या उसमें सुधार करने में सहयोग करे। यदि संपादक या प्रकाशक को किसी तीसरे पक्ष से पता चलता है कि प्रकाशित रचना में कोई महत्त्वपूर्ण त्रुटि है, तो लेखक का दायित्व है कि वह तुरंत शोध-पत्र वापस ले या उसमें सुधार करे या मूल शोध-पत्र की सत्यता का प्रमाण संपादक को प्रदान करे।